पाठ - 11 झाँसी की रानी

प्रश्न - उत्तर

रचना से संवाद: मेरे उत्तर मेरे तर्क

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

प्रश्न 1. 'झाँसी की रानी' कविता की पंक्ति "बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी" में 'नई जवानी' शब्द किस भाव को व्यक्त करता है?

(क) देश का स्वाभिमान

(ख) विद्रोह की चिंगारी (राष्ट्रीय चेतना और उत्साह का संचार)

(ग) स्वाधीनता का भय

(घ) भारत की युवावस्था

- **उपयुक्तता का तर्क:** सदियों की गुलामी के कारण भारत अपनी शक्ति और साहस खोकर 'बूढ़ा' और शिथिल हो चुका था। 'नई जवानी' शब्द अंग्रेज़ों के दमन के विरुद्ध देशवासियों के मन में अचानक फूटी क्रांति की चिनगारी, नए जोश और आज़ादी पाने के अदम्य उत्साह को व्यक्त करता है।

प्रश्न 2. लक्ष्मीबाई को 'छबीली' कहना उनके व्यक्तित्व की किस विशेषता को दर्शाता है?

(क) विनम्रता

(ख) शोभायुक्त (प्यारी, चंचल और सजीली आकृति)

(ग) सहिष्णुता

(घ) कठोरता

- **उपयुक्तता का तर्क:** 'छबीली' का अर्थ होता है कांतियुक्त, सुंदर और चंचल। बचपन में रानी लक्ष्मीबाई अत्यधिक ऊर्जावान, प्यारी और शस्त्र-संचालन में निपुण थीं, जिसके कारण उनके परिवार और कानपुर के नाना साहब उन्हें लाड़ से इस शोभायुक्त नाम से पुकारते थे।

प्रश्न 3. "बुझा दीप झाँसी का" पंक्ति का भावार्थ है-

(क) अंग्रेज़ों का झाँसी पर अधिकार हो जाना

(ख) झाँसी राज्य की उम्मीदों का नष्ट हो जाना

(ग) राजा की आकस्मिक मृत्यु होना (और राज्य का उत्तराधिकारी विहीन होना)

(घ) रानी के जीवन में उदासी होना

- **उपयुक्तता का तर्क:** कविता के अनुसार, राजा गंगाधर राव के असमय और निःसंतान निधन को 'झाँसी का दीप बुझना' कहा गया है, क्योंकि प्राचीन काल में राजा के मरते ही राज्य का राजनीतिक केंद्र समाप्त हो जाता था और वह डलहौजी की हड़प नीति का शिकार होने के लिए लाचार हो गया।

प्रश्न 4. "इस स्वतंत्रता-महायज्ञ में कई वीरवर आए काम" पंक्ति में स्वतंत्रता आंदोलन की किस ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत किया गया है?

(क) असहयोग आंदोलन

(ख) भारत छोड़ो आंदोलन

(ग) 1857 की क्रांति (प्रथम स्वतंत्रता संग्राम)

(घ) सविनय अवज्ञा आंदोलन

- **उपयुक्तता का तर्क:** यह पूरी कविता भारत के **सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम** की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है, जिसमें ताँतिया टोपे, कुँवर सिंह और अज़ीमुल्ला जैसे वीरों ने अपनी क़ुर्बानी दी थी।

प्रश्न 5. "व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया" पंक्ति में 'यह' शब्द किसके लिए कहा गया है?

(क) नवाबों के लिए

(ख) जनरल डलहौजी के लिए

(ग) लेफ्टिनेंट वॉकर के लिए

(घ) ब्रिटिश राज (ईस्ट इंडिया कंपनी के अंग्रेज़ शासक)

- **उपयुक्तता का तर्क:** अंग्रेज़ शुरुआत में भारत में व्यापार करने के उद्देश्य से 'ईस्ट इंडिया कंपनी' के रूप में आए थे और यहाँ के मुगल बादशाहों व राजाओं के सामने हाथ जोड़कर व्यापार की दया की भीख माँगते थे, परंतु बाद में उन्होंने पूरे देश पर कब्ज़ा कर लिया।

मेरी समझ मेरे विचार

प्रश्न 1. 'झाँसी की रानी' कविता के आधार पर बताइए कि लक्ष्मीबाई के प्रिय खेल कौन-कौन से थे? उनका बचपन दूसरों से किस प्रकार भिन्न था?

- **उत्तर:** कविता के अनुसार, रानी लक्ष्मीबाई के प्रिय खेल थे—**नकली युद्ध करना, चक्रव्यूह (व्यूह) की रचना करना, घने जंगलों में शिकार खेलना, शत्रु की सेना को घेरना और मिट्टी व पत्थरों के नकली किले (दुर्ग) तोड़ना**।
    - **बचपन की भिन्नता:** उनका बचपन सामान्य लड़कियों से बिल्कुल अलग था। जहाँ अन्य लड़कियाँ गुड़ियों, बर्तनों और खिलौनों से खेलती थीं, वहीं लक्ष्मीबाई की बचपन की सहेलियाँ **बरछी, ढाल, तलवार (कृपाण) और कटार** जैसे खूंखार अस्त्र-शस्त्र थे। वे गुड़ियों की शादी रचाने के बजाय वीर शिवाजी की गाथाएँ ज़बानी याद करती थीं और युद्ध का अभ्यास करती थीं।

प्रश्न 2. "किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई" पंक्ति के माध्यम से किस घटना की ओर संकेत किया गया है?

- **उत्तर:** इस पंक्ति के माध्यम से **झाँसी के राजा गंगाधर राव की आकस्मिक बीमारी, मृत्यु और उसके बाद रानी लक्ष्मीबाई के वैधव्य (विधवा होने) तथा झाँसी पर आए अंग्रेज़ी संकट** की ओर संकेत किया गया है। विवाह के बाद महलों में जो खुशियाँ और सौभाग्य आया था, उसे समय की क्रूर चाल (कालगति) सहन नहीं कर

सकी। राजा जी निःसंतान ही मृत्यु को प्राप्त हो गए, जिससे झाँसी का राजनीतिक दीपक बुझ गया और डलहौजी को राज्य हड़पने का क्रूर अवसर मिल गया। इसी दुखद परिवर्तन को 'काली घटा' कहा गया है।

प्रश्न 3. "महलों ने दी आग, झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी" पंक्ति समाज के विभिन्न वर्गों की एकता को दर्शाती है, इस एकता का स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में क्या महत्व है?

- **उत्तर:** इस पंक्ति का स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में अत्यधिक ऐतिहासिक और रणनीतिक महत्व है। यह दर्शाती है कि अंग्रेज़ों के विरुद्ध लड़ी गई १८५७ की क्रांति किसी एक वर्ग या राजा की निजी लड़ाई नहीं थी, बल्कि इसमें **अमीर (महल) और गरीब (झोंपड़ी) दोनों वर्गों का सामूहिक राष्ट्रव्यापी एकीकरण** था। महलों के राजाओं ने जहाँ इस महायज्ञ में धन और सैन्य नेतृत्व की आग दी, वहीं झोंपड़ियों के गरीब किसानों और सैनिकों ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर विद्रोह की ज्वाला को धधकाया। अंग्रेज़ों को भारत से भगाने के लिए समाज के सभी जातियों और वर्गों का एकजुट होना ही इस महासंग्राम की वास्तविक शक्ति थी।

प्रश्न 4. "सरे-आम नीलाम छापते थे अंग्रेजों के अखबार" पंक्ति में 'नीलाम छापते' शब्द किसकी ओर संकेत करता है? यह भी बताइए कि किसकी नीलामी की जाती थी और क्यों?

- **उत्तर:** 'नीलाम छापते' शब्द अंग्रेज़ों के अखबारों में छपने वाले **सार्वजनिक बोलियों के विज्ञापनों** की ओर संकेत करता है। अंग्रेज़ अधिकारी भारतीय राजाओं और नवाबों के राज्यों को अवैध रूप से हड़पने के बाद, उनके रनिवासों (महलों) में प्रवेश करके रानियों और बेगमों के व्यक्तिगत सोने-चांदी के कीमती आभूषणों, कलाकृतियों और शाही रेशमी कपड़ों को ज़ब्त कर लेते थे। वे इन शाही कपड़ों और 'लखनऊ के नौलखे हारों' व 'नागपुर के ज़ेवरों' को कलकत्ता के बाज़ारों में सरेआम नीलाम करते थे ताकि भारतीय शासकों के आत्मसम्मान को आहत किया जा सके और स्वयं धन कमाया जा सके।

प्रश्न 5. "अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी" पंक्ति में 'अवतारी' शब्द व्यक्ति के विशेष गुणों की ओर इंगित कर रहा है। कविता के आधार पर बताइए कि लक्ष्मीबाई के किन गुणों के कारण उनको 'अवतारी' कहा गया है?

- **उत्तर:** लक्ष्मीबाई को 'अवतारी' (ईश्वर का साक्षात् अंश) इसलिए कहा गया है क्योंकि मात्र **तेईस वर्ष की अल्पायु** में उन्होंने ऐसे विलक्षण और अलौकिक कार्य किए जो किसी साधारण मनुष्य के लिए असंभव हैं। उनके मुख्य गुण निम्नलिखित थे:
    1. **अदम्य साहस और युद्ध-कौशल:** उन्होंने पुरुषों के वेश में अकेले ही अंग्रेज़ों के बड़े-बड़े जनरलों (जैसे वॉकर, स्मिथ और ह्यूरोज़) को युद्ध के मैदान में धूल चटाई।
    2. **सर्वोच्च बलिदान व स्वाभिमान:** उन्होंने गुलामी स्वीकार करने के बजाय आज़ादी की रक्षा के लिए सौ मील की निरंतर यात्रा की और देश के लिए प्राणों की आहुति दे दी।
    3. **चेतना जागृत करना:** वे भारतीय जनमानस को गुलामी की गहरी नींद से जगाकर 'स्वतंत्रता की चिनगारी' फूंकने आई थीं, जो केवल एक दिव्य अवतारी सत्ता ही कर सकती है।

विधा से संवाद: कविता में कहानी (समय-रेखा)

यह कविता एक **कथात्मक कविता** (Narrative Poetry) का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें रानी लक्ष्मीबाई के जीवन-वृत्त को क्रमिक ऐतिहासिक समय-रेखा पर दर्शाया गया है:

1	**बचपन: १९०४-१९१५**	कानपुर में 'छबीली' ने अस्त्र-शस्त्र से खेला
2	**विवाह व आगमन**	झाँसी के राजा गंगाधर से विवाह
3	**वैधव्य का वज्रपात**	राजा गंगाधर राव का निःसंतान निधन
4	**अंग्रेज़ी दमन**	डलहौजी द्वारा झाँसी पर कब्ज़ा
5	**क्रांति का शंखनाद: १८५७**	धुंधूपंत व लक्ष्मीबाई द्वारा महायज्ञ प्रारंभ
6	**रणभूमि संग्राम**	लेफ्टिनेंट वॉकर हारा, ग्वालियर पर अधिकार
7	**वीरगति: कुल २३ वर्ष**	नाला पार करते समय सिंहनी शहीद हुईं

विषयों से संवाद: साझा साथ / साझा संघर्ष

प्रश्न 1. "लावारिस का वारिस बनकर..." ब्रिटिश राज किस नीति के कारण ऐसा करता था?

- **उत्तर:** ब्रिटिश राज यह कार्य **'डॉक्ट्रिन ऑफ़ लैप्स' (हड़प नीति या व्यपगत का सिद्धांत)** के कारण करता था। इस क्रूर नीति का निर्माण अंग्रेज़ गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी ने किया था। इस नीति के अनुसार, यदि कोई भारतीय राजा बिना किसी प्राकृतिक या कानूनी उत्तराधिकारी (निःसंतान) के मर जाता था, तो उसे किसी दत्तक पुत्र (गोद लिए बच्चे) को अपना राज्य सौंपने का अधिकार नहीं था। वह राज्य स्वतः ही 'लावारिस' मानकर ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया जाता था। झाँसी, नागपुर और सतारा इसी नीति के शिकार हुए थे।

प्रश्न 2. 1857 की क्रांति के मुख्य वीरों की सूची एवं उनका योगदान:

1. **नाना धुंधूपंत पेशवा:** इन्होंने बिठूर और कानपुर में अंग्रेज़ों के विरुद्ध विद्रोह का नेतृत्व किया और क्रांति के लिए गुप्त रूप से देश-भर के राजाओं को एकत्रित कर युद्ध-सामग्री जुटाई।
2. **ताँतिया टोपे:** ये लक्ष्मीबाई के गुरु और एक अत्यंत कुशल छापामार युद्ध विशेषज्ञ थे, जिन्होंने ग्वालियर और मध्य भारत में अंग्रेज़ों की सेना की नाक में दम कर दिया था।
3. **चतुर अज़ीमुल्ला:** ये नाना साहब के चतुर सलाहकार और रणनीतिकार थे, जिन्होंने अंग्रेज़ों की कूटनीति का कड़ा जवाब देने के लिए प्रचार-प्रसार का कार्य सँभाला।
4. **अहमद शाह मौलवी:** अवध और फैजाबाद के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, जिन्होंने अंग्रेज़ों के विरुद्ध कड़ा जेहाद छेड़कर आम जनता को विद्रोह के लिए प्रेरित किया।
5. **ठाकुर कुँवर सिंह:** बिहार के जगदीशपुर के ८० वर्षीय वयोवृद्ध ज़मींदार, जिन्होंने बुढ़ापे में भी तलवार खींचकर अंग्रेज़ों की सेना को कई बार परास्त किया और वीरगति पाई।

प्रश्न 3. वर्तमान कार्यक्षेत्रों में कार्यरत स्त्रियों के नाम:

क्र.सं.	चुनौतीपूर्ण कार्यक्षेत्र	भारत की प्रसिद्ध महिला का नाम	उनका मुख्य अवदान / विवरण
1	**दमकल केंद्र (फायर ब्रिगेड)**	**हर्षिनी कान्हेकर**	भारत की पहली महिला फायर फाइटर, जिन्होंने पुरुषों के इस कठिन क्षेत्र में प्रवेश कर अग्नि-शमन की कमान सँभाली।
2	**रेलगाड़ी / मेट्रो चालक**	**सुरेखा यादव**	भारत की पहली महिला रेलगाड़ी लोको-पायलट, जो आज सेमी-हाई स्पीड 'वंदे भारत एक्सप्रेस' का सफ़लतापूर्वक संचालन कर रही हैं।
3	**खेल के विभिन्न क्षेत्र**	**पी.वी. सिंधु / मैरी कॉम**	बैडमिंटन और मुक्केबाज़ी में भारत को वैश्विक स्तर पर ओलंपिक पदक दिलाकर देश का मस्तक गर्व से ऊँचा किया।
4	**व्यापार और प्रबंधन (CEO)**	**किरण मजूमदार शॉ / फाल्गुनी नायर**	'बायोकोन' और 'नायका' जैसी अरबों डॉलर की कंपनियों की स्थापना करके भारतीय महिला उद्यमिता को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया।
5	**विज्ञान और तकनीक (ISRO)**	**ऋतु करिधाल (रॉकेट वुमन)**	इसरो के 'चंद्रयान-3' और 'मंगलयान' मिशनों में मुख्य वैज्ञानिक नेतृत्व प्रदान करके अंतरिक्ष में भारत का झंडा फहराया।

प्रश्न 4. 1857 की क्रांति के मुख्य केंद्रों का मानचित्र कार्य

पाठ्यपुस्तक में दिए गए भारत के मानचित्र के अनुसार मुख्य शहरों की भौगोलिक अवस्थिति विवरण निम्नलिखित है:

1. **झाँसी:** उत्तर प्रदेश के दक्षिणी भाग में (बुंदेलखंड क्षेत्र) स्थित है।
2. **कानपुर:** उत्तर प्रदेश के मध्य भाग में, गंगा नदी के तट पर स्थित प्रमुख औद्योगिक केंद्र।
3. **देहली (दिल्ली):** भारत के उत्तर-मध्य भाग में स्थित यमुना नदी के किनारे स्थित मुख्य राजनीतिक केंद्र।
4. **लखनऊ:** उत्तर प्रदेश की वर्तमान राजधानी, जो अवध क्षेत्र का मुख्य केंद्र थी।
5. **नागपुर:** महाराष्ट्र के पूर्वी भाग (विदर्भ क्षेत्र) में स्थित है।
6. **मेरठ:** उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग में, जहाँ से १० मई १८५७ को सैनिक विद्रोह की पहली चिनगारी फूटी थी।
7. **पटना:** बिहार की राजधानी, जो पूर्वी भारत में क्रांति का प्रमुख गढ़ थी।

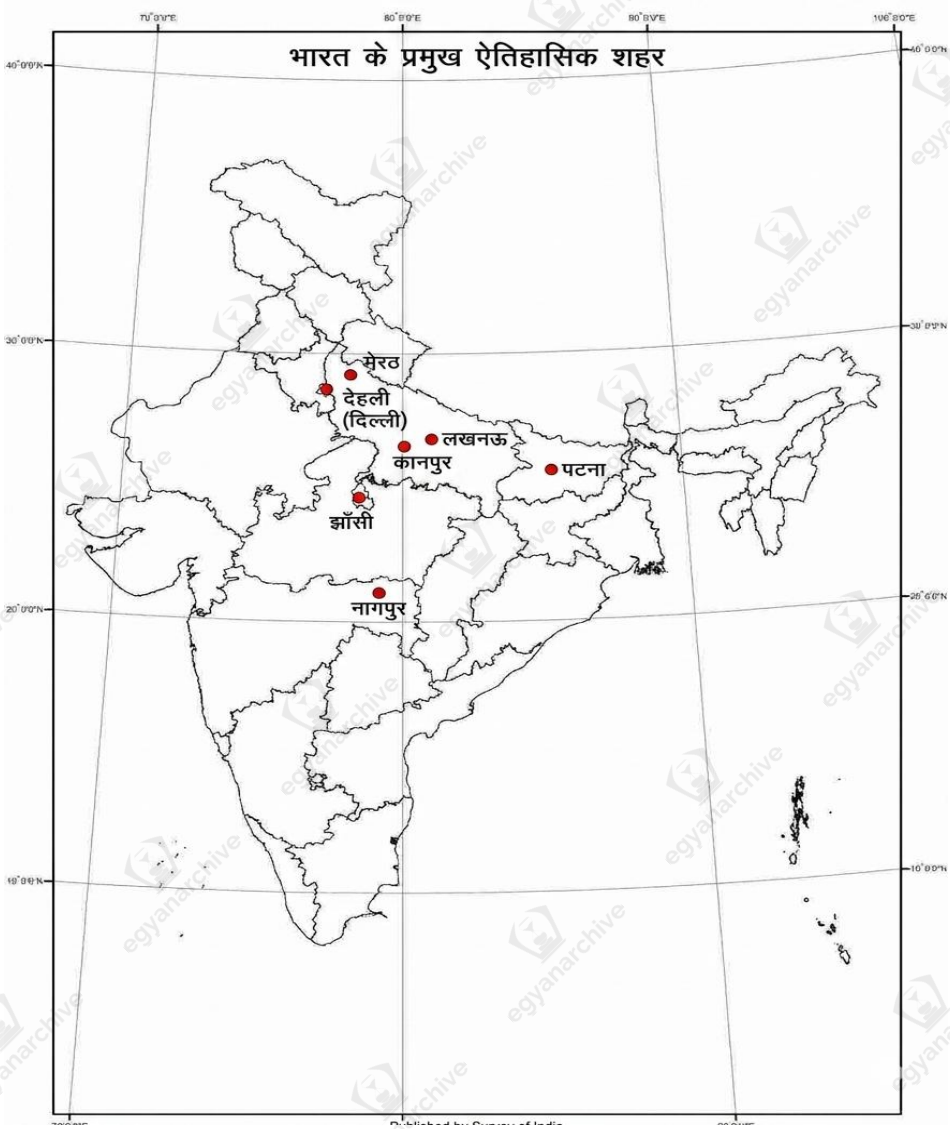

भाषा से संवाद: व्याकरण की बात

1. (क) अनेकार्थी शब्द (शब्द एक अर्थ अनेक): पाठ के संदर्भ में सटीक अर्थ

- **कर** -> *काव्य पंक्ति:* "तीर चलाने वाले **कर** में उसे चूड़ियाँ कब भाई"
    - **सटीक अर्थ: हाथ** (अन्य अर्थ: टैक्स, किरण).
- **विधि** -> *काव्य पंक्ति:* "रानी विधवा हुई हाय! **विधि** को भी नहीं दया आई"
    - **सटीक अर्थ: विधाता / भाग्य का निर्माता** (अन्य अर्थ: तरीका, नियम).
- **द्वंद्व** -> *काव्य पंक्ति:* "रानी ने तलवार खींच ली, हुआ **द्वंद्व** असमानों में"
    - **सटीक अर्थ: दो योद्धाओं के बीच होने वाला युद्ध (मल्ल-युद्ध)** (अन्य अर्थ: जोड़ा, असमंजस).
- **गोलों** -> *काव्य पंक्ति:* "हो मदमाती विजय, मिटा दे **गोलों** से चाहे झाँसी"
    - **सटीक अर्थ: तोप से दागे जाने वाले लोहे के भारी गोले** (अन्य अर्थ: नारियल, गोल पिंड).
- **तेज** -> *काव्य पंक्ति:* "मिला **तेज** से **तेज**, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी"
    - **सटीक अर्थ: आत्मा का अलौकिक प्रकाश / दिव्य चमक** (अन्य अर्थ: धार, तीव्र गति).

2. काव्य-लय हेतु प्रयुक्त देशज/भिन्न वर्तनी वाले शब्द:

1. **कानपूर** (मानक वर्तनी: कानपुर) -> कविता की मात्रा और लय को बैठाने के लिए दीर्घ 'ऊ' का प्रयोग किया गया है।
2. **देहली** (मानक वर्तनी: दिल्ली) -> प्राचीन नाम का प्रयोग काव्यात्मक प्रवाह के लिए किया गया है।
3. **उदैकूर** (मानक वर्तनी: उदयपुर) -> बुंदेली प्रांतीय उच्चारण के प्रभाव के कारण।
4. **सबेरी** (मानक वर्तनी: सवेरे) -> 'व' के स्थान पर 'ब' का प्रयोग लोक bhasha के प्रभाव को दर्शाता है।

(ख) मुहावरे: पहचान, अर्थ एवं वाक्य प्रयोग (पृष्ठ 190)

1. **डलहौजी ने पैर पसारे अब तो पलट गई काया**
    - *मुहावरा:* **पैर पसारना** (अर्थ: अपने अधिकार या साम्राज्य का अनुचित विस्तार करना)।
    - *वाक्य प्रयोग:* अंग्रेज़ों ने व्यापार के बहाने भारत में *पैर पसारे* और धीरे-धीरे पूरे देश को गुलाम बना लिया।
    - *मुहावरा:* **काया पलटना** (अर्थ: स्थिति पूरी तरह बदल जाना)।
    - *वाक्य प्रयोग:* लॉटरी जीतते ही गरीब रमेश के जीवन की *काया पलट गई*।
2. **राजाओं नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया**
    - *मुहावरा:* **पैरों ठुकराना** (अर्थ: घोर अपमान करना, बुरी तरह ठुकरा देना)।
    - *वाक्य प्रयोग:* अहंकारी डलहौजी ने भारत के बड़े-बड़े राजाओं को अपने *पैरों ठुकराया*।
3. **हुआ यज्ञ प्रारंभ उन्हें तो / सोई ज्योति जगानी थी**
    - *मुहावरा:* **ज्योति जगाना** (अर्थ: चेतना या अलौकिक भावना जागृत करना)।
    - *वाक्य प्रयोग:* रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी क़ुर्बानी से पूरे देशवासियों के मन में आज़ादी की *ज्योति जगाई*।
4. **मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी**
    - *मुहावरा:* **धूम मचाना** (अर्थ: तहलका मचाना, अत्यधिक प्रसिद्ध होना या सक्रिय होना)।
    - *वाक्य प्रयोग:* १८५७ की क्रांति में मेरठ और कानपुर के वीर सैनिकों ने अंग्रेज़ों के खिलाफ *भारी धूम मचाई थी*।

सृजन (Creative Work)

1. सखियों (काना और मंदरा) द्वारा लक्ष्मीबाई को लिखा गया युद्ध रणनीति पत्र

प्रति,

परम आदरणीया शौर्य स्वरूपा रानी लक्ष्मीबाई जी,

झाँसी दुर्ग रनिवास क्षेत्र

प्रिय सखी,

हम दोनों (काना और मंदरा) इस पत्र के माध्यम से आपको अंग्रेज़ सेनापति जनरल स्मिथ और कैप्टन ह्यूरोज़ की संयुक्त सैन्य घेराबंदी के विषय में सतर्क करना चाहती हैं। हमारी गुप्तचर टुकड़ी से सूचना मिली है कि अंग्रेज़ सेना हमारे ग्वालियर के किले को चारों तरफ से घेरने की क्रूर रणनीति बना रही है।

हमारी योजना यह है कि कल सुबह के युद्ध में हम दोनों अपनी महिला सेना (दुर्गा दल) के साथ अंग्रेज़ों की अग्रिम टुकड़ी पर दाएँ और बाएँ तरफ से अचानक धावा बोलेंगे, ताकि उनके तोपखाने का ध्यान भटक जाए। जैसे ही अंग्रेज़ सेना में खलबली मचेगी, आप अपनी मुख्य तलवारबाज़ी वाहिनी के साथ बीच से स्मिथ पर सीधा प्रहार करना।

हमारी पीठ के पीछे जो नाला है, वह एक बड़ी भौगोलिक चुनौती बन सकता है, इसलिए हमें अंग्रेज़ों को मैदान में ही मार-काटकर परास्त करना होगा। हम अपनी आखिरी साँस तक झाँसी के आत्मसम्मान के लिए आपके कंधे से कंधा मिलाकर लड़ेंगी।

आपकी विश्वसनीय सखियाँ,

काना एवं मंदरा

2. युद्ध पूर्व रात्रि में रानी के मानसिक ऊहापोह पर आधारित डायरी प्रविष्टि

दिनांक: 16 जून 1858

स्थान: ग्वालियर सैन्य शिविर, रात्रि 11:30 बजे

कल सुबह हमारे जीवन का सबसे भीषण और निर्णायक संग्राम होने वाला है। आज मन में विचारों का एक अजीब बवंडर (ऊहापोह) उठ रहा है। एक तरफ अपने वीर पुरखों का अभिमान और झाँसी को अंग्रेज़ों के चंगुल से मुक्त कराने का अटूट संकल्प है, तो दूसरी तरफ अपने थके हुए नए घोड़े की अड़ियल प्रवृत्ति को लेकर मन थोड़ा आशंकित है। जनरल स्मिथ की सेना हमारे बहुत करीब आ चुकी है। काना और मंदरा ने मोर्चा सँभाल लिया है, पर ह्यूरोज़ के पीछे से घेरने का डर भी मन में है।

यदि कल मेरी जान भी चली जाए, तो मुझे कोई अफ़सोस नहीं होगा, क्योंकि बीस वर्ष की इस तेईस वर्ष की आयु में मैंने कभी अंग्रेज़ों के आगे सिर नहीं झुकाया। मेरी एकमात्र चिंता यह है कि झाँसी की आज़ादी की जो चिनगारी महलों और झोंपड़ियों ने मिलकर सुलगाई है, वह मेरे जाने के बाद भी बुझनी नहीं चाहिए। इतिहास चाहे चुप हो जाए, पर आने वाली पीढ़ियाँ इस क़ुर्बानी को याद रखेंगी। हे माँ भवानी! कल मेरी तलवार को वह शक्ति देना कि मैं अकेले ही शत्रुओं के चक्रव्यूह को चीर सकूँ। कल हमारा विजयोत्सव होगा या फिर अमर बलिदान!

गतिविधियाँ (Activities)

1. शौर्य के समाचार (News Reporting Script)

(पृष्ठभूमि में ढोल और रणभेरी का ओजपूर्ण संगीत गूँजता है। समाचार वाचक कड़े और गंभीर स्वर में बोलना शुरू करता है।)

समाचार वाचक: "नमस्कार! यह आकाशवाणी का शौर्य बुलेटिन है। आज झाँसी और ग्वालियर के मैदानों से एक सनसनीखेज और गौरवमयी समाचार प्राप्त हो रहा है। हमारी मुख्य वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई ने आज अंग्रेज़ी सेना के लेफ्टिनेंट वॉकर को आमने-सामने के द्वंद्व युद्ध में बुरी तरह ज़ख्मी कर दिया है, जिसके बाद वॉकर अपनी जान बचाकर मैदान से भाग खड़ा हुआ है।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, रानी ने दोनों हाथों में तलवारें थामकर अंग्रेज़ों के तोपखाने को पूरी तरह तहस-नहस कर दिया है। स्मिथ की सेना पीछे हटने को विवश हो गई है। यद्यपि रानी का प्रिय घोड़ा कालपी आते समय वीरगति को प्राप्त हो गया, पर रानी ने हार नहीं मानी और ग्वालियर पर पूर्ण अधिकार कर लिया है। पूरे बुंदेलखंड के नागरिक तालियाँ बजाकर इस 'मर्दानी' सिंहनी का स्वागत कर रहे हैं। अंग्रेज़ जनरलों में इस समय भारी खलबली और अजब हैरानी का माहौल है। हम रानी लक्ष्मीबाई के इस अदम्य साहस को सलाम करते हैं। लमही समाचार के लिए।"

2. 'हरबोलों' की लोकगायन परंपरा और राष्ट्रभक्ति गीत संकलन

- **हरबोला समुदाय का परिचय:** 'हरबोला' बुंदेलखंड (उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की सीमा) क्षेत्र का एक पारंपरिक लोकगायक समुदाय है, जो पीले वस्त्र पहनकर सुबह-सुबह गलियों में घूम-घूमकर भगवान शिव (हर-हर) के नाम के साथ इतिहास के महान राजाओं और विशेषकर रानी लक्ष्मीबाई के शौर्य के गीत गाकर भिक्षा मांगते हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान ने इन्हीं के मुख से यह कालजयी गाथा सुनी थी।
- **हमारे क्षेत्र का प्रचलित देशभक्ति लोकगीत (बुंदेली शौर्य पद्य):**

"झाँसी की रानी बड़ लड़ैया, अंग्रेज़न कूँ धूल चटैया।
हाथ में खंडा, काँधे पे ढाल, गोरे भागे देख विकराल॥
बुंदेलखंड की माटी बोले, लक्ष्मीबाई के संग डोलै।
तोपों के गोले जहाँ चले, वहाँ रानी मर्दानी लड़े॥"

भाषा संगम (विभिन्न प्रांतीय भाषाई रूप)

संविधान की आठवीं अनुसूची में समाहित विभिन्न भारतीय भाषाओं में **'बहन'** (सिस्टर) शब्द को निम्नलिखित आदरणीय रूपों में पुकारा जाता है:

- **हिंदी / उर्दू / कश्मीरी / नेपाली:** बहन / हमशीरा / बैनी
- **संस्कृत:** भगिनी, स्वसृः
- **पंजाबी / सिंधी:** भैंण / भेण
- **मराठी / गुजराती / कोंकणी:** बहीण / बहेन / भयण
- **बांग्ला / असमिया / ओड़िआ:** बोन / भनी / भउणी
- **तेलुगु / तमिल / कन्नड़:** चेल्लेलु / तंगै / तंगi (छोटी बहन), अक्का (बड़ी बहन)

- **मलयालम:** सहोदरि, पेङळ्
- **मणिपुरी:** मचन, मनाओ
- **मातृभाषा (हिंदी) में मूल वाक्य का शुद्ध रूप:** "कानपूर के नाना की मुँहबोली बहन 'छबीली' थी।"

झरोखे से: झलकारी बाई

झलकारी बाई का संक्षिप्त परिचय एवं १८५७ में अवदान

झलकारी बाई का जन्म १८३० में झाँसी के पास भोजला गाँव में एक अत्यंत साधारण कोरी परिवार में हुआ था। वे बचपन से ही तीरंदाज़ी, कुश्ती और अस्त्र-शस्त्र चलाने में अत्यधिक निपुण थीं। उनके पति पूरन कोरी राजा गंगाधर राव की सेना के एक बहादुर सैनिक थे। जब रानी लक्ष्मीबाई को झलकारी बाई के अदम्य साहस और शारीरिक बनावट (जो हुबहू रानी जैसी दिखती थी) के बारे में पता चला, तो उन्होंने उन्हें अपनी महिला सेना **'दुर्गा दल'** का सेनापति नियुक्त कर दिया।

सन् १८५८ में जब जनरल सर ह्यूरोज़ ने झाँसी के किले को चारों तरफ से घेर लिया, तो झलकारी बाई ने अद्भुत रणनीति अपनाई। उन्होंने रानी लक्ष्मीबाई को उनके छोटे बच्चे के साथ सुरक्षित किले से बाहर सुरक्षित निकल जाने का सुझाव दिया और **स्वयं रानी लक्ष्मीबाई का वेश धारण कर** सेना की कमान सँभाली। उनकी इस समरूपता के कारण अंग्रेज़ भ्रमित रहे और रानी लक्ष्मीबाई सुरक्षित बाहर भाग सकीं। इस भयंकर युद्ध में अंग्रेज़ों से लड़ते हुए झलकारी बाई ने वीरगति पाई और अमर शहीद बन गईं।

संत रैदास की तर्ज पर: रानी लक्ष्मीबाई और झलकारी बाई के चरित्र की तुलनात्मक तालिका

चरित्र / तुलना का बिंदु	वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई	अमर शहीद झलकारी बाई
1. सामाजिक पृष्ठभूमि	राजघराने से संबद्ध, कानपुर के पेशवा की मुँहबोली बेटी और झाँसी की महारानी।	एक अत्यंत साधारण ग्रामीण गरीब कोरी (दलित) परिवार से ताल्लुक रखती थीं।
2. सैन्य भूमिका	संपूर्ण झाँसी की सेना और स्वतंत्रता महायज्ञ की मुख्य सूत्रधार व महारानी थीं।	लक्ष्मीबाई की महिला सैन्य टुकड़ी **'दुर्गा दल'** की साहसी कमांडर व सेनापति थीं।
3. युद्ध की अनूठी रणनीति	सीधे मैदानों में कालपी और Gwalior तक तलवारबाज़ी से अंग्रेज़ों को धूल चटाई।	**रानी का छद्म वेश धारण कर** अंग्रेज़ों को भ्रम में रखा ताकि मुख्य रानी सुरक्षित बच सकें।
4. चरित्र की समानताएँ	दोनों बचपन से अस्त्र-शस्त्र चलाने में निपुण थीं और दोनों ने मातृभूमि के स्वाभिमान के लिए ह्यूरोज़ की सेना से लड़ते हुए सर्वोच्च वीरगति पाई।	दोनों बुंदेलखंड की लोक-स्मृति और लोककथाओं का एक अमर, अमिट और अखंड हिस्सा हैं।

Links और References

अध्याय के अंतर्गत दिए गए प्रामाणिक वैधानिक और डिजिटल संदर्भों का विवरणात्मक विवरण निम्नलिखित है:

- 🔗 **छत्तीसगढ़ राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार समाचार संदर्भ (Naidunia):** https://www.naidunia.com/... — ७ वर्षीय साहसी बालिका 'कांति' के अदम्य साहस (जिसने अपनी बहन को हाथियों से बचाया) पर आधारित राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार की प्रामाणिक कड़ी।
- 🔗 **NCERT Official - झाँसी की रानी (दृश्य और व्याख्या):** https://youtu.be/nyoqcOrlWPw — विषय विशेषज्ञों द्वारा सुभद्रा कुमारी चौहान की इस ओजपूर्ण कविता के सस्वर गायन और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की समीक्षा का आधिकारिक वीडियो संदर्भ।
- 🔗 **प्रकाशन विभाग संदर्भ पुस्तकें (Government India):** *'भारत की महान नारियाँ'* श्रृंखला की पुस्तकें, भारत सरकार, नई दिल्ली—१८५७ की अन्य गुमनाम वीरांगनाओं के ऐतिहासिक अभिलेखों के अध्ययन हेतु प्रामाणिक संदर्भ।